पल भर में ट्विटर पर कर्नाटक विधानसभा सेक्स वीडियो का नामकरण हुआ पोर्नगेट...

Joy-BJP can proudly Say their Minister in Karnataka Assembly was Hard at Work

K Sudarshan - Karnataka Assembly is one place where the network must be very good to get nice video streaming on your phone!! Wonder which network?

Shreyas Panse -One of the Karnataka ministers who resigned was Women and Child Development minister. There's a joke in there somewhere.

indianshealth -these shameless people have no right to make laws for us. time to enact 'Right to Recall' and remove them

S Irfan Habib -Holier than thou attitude of BJP has gone for a six in Karnataka.Time to focus on "culture n morality" within the party.

Suryanarayan Ganesh -Nitin Gadkari's speeches attacked Mayawati for erecting statues. BJP in Karnataka assembly had erections when creating statutes.

pragmatic_desi-Has anyone given the Khajuraho & Indian culture example to justify what the Karnataka minister was watching in the Vidhan Sabha?

Avinash Bhat -Camera men who closed up on minister Ipad in Karnataka Assembly must be immediately arrested for trespassing & invasion of privacy

dibang-chaal charitra chehra | Porngate minister CC Patil had once said: Women should know how much skin they should cover. I don't favour women wearing provocative clothes. They need to be dignified in what they wear.

narayanan s-Now I know being a minister is a tough job

Ram Gopal Varma-Ministers watching porn in the assembly is a sure sign of an emerging nd shining india..jai ho

Sagarika Ghose-Gaumata party attacks Husain for his paintings but watches porn on screen in the Assembly instead!

Madhavan Narayanan-Ram Rajya in Karnataka. Laxman Rekha turns Laxman Dekha!

rajneesh kapoor-Come on they are ministers. Maybe they were just doing research on politics, like on Clinton.& on ND Tiwari. Ever

thought of that?

pallavi ghosh-Porngate an interesting&sleazy break from UP elex..:-)

Neeti Palta-Perhaps the minister was just happy that for a change someone else was being exposed

Agnivo-Has the sri ram sene vandalised bjp party office yet

Vinod Sharma-Bill must be laughing #porngate! In the Oval Office, he wasn't watching Lewinsky on his phone!!

Pritish Nandy-Porngate, my foot. its Yawngate. ND Tewari did better.At least the women were real.
sunil kumar to PritishNandy-...and also look at nd'ts age. with real in 80s, with video in 50's! shame...

Agnivo-Dear Senas. Next time you object to V Day celebrations or beat up couples, look at your own brethren in BJP.

Kiran Kumar S-Instead of dumping ND Tiwari, who slept on porngate camera with 3 young girls at Governor's mansion, Congress celebrated Holi at his home!

Sameer Verma-Courtesy ND Tiwari, Parasram Maderna, Porngate - SunnyLeone is now contemplating a career in Indian Politics either

GabbbarSingh- I was showing him the lessons for child development since its inception,Basic majboot kar rha tha

Satya Mahapatra-Small screens no fun, Sud demand for tablets and fast connections. With thse at least, they can enjoy what they watch

A Bhattacharya-Err...but isn't it the same BJP who bash hapless guys and gals on the V-day, in the name Desh ki Sanskriti?

Rajdeep Chakraborty-Breaking News: Sunny Leone Now Wants To Join Karnataka Assembly

Madhavan Narayanan-Won't be surprised if MLAs gang up & haul up the TV channel for breach of "privilege". India is stuck with those colonial concepts

Shiv Aroor -That's right. Give our netas iPads. No fun with those tiny screens.

Vidyut-I think the BJP now has a moral obligation to rein in the anti-obscenity trolls this Valentine's Day - exactly one week from today

SUHEL SETH-It is great that this joker got caught...now at least these BJP blokes will have no moral stand to beat up people on Valentine's Day. This bloke who was watching porn was at least not flinging microphones! I'd much rather him watch porn than indulge in hooliganism!

Rana Safvi-we ban phones in schools cant we ban mobiles in lwgislatures too?

The UnReal Times-Some people watch porn at home, some people watch porn in the House

सिंगापुर के श्री श्रीनिवास पेरूमल मंदिर के एक धार्मिक समारोह थाईपुसम शोभायात्रा में भाग लेता हुआ एक हिंदू भक्त अपने पूरे बदन को नुकीली तीरों से छेदकर चल रहा है

जमैका में सरकार ने हजारों बंदूकें पिघलाईं

जमैका, 8 फरवरी। जमैका में सरकार ने करीब दो हजार अवैध हथियारों को तबाह कर दिया है। सरकार का ये कदम इस कैरीबियाई द्वीप पर बढ़ते अपराध की रोकथाम के लिए किया गया है।

राजधानी किंगस्टन में पिस्तौल और रिवॉल्वरों को भट्ठी में पिघलाया गया है। करीब आधा टन बारूद भी तबाह किया गया है। जमैका में अपराध के लिए बंदूक का इस्तेमाल बहुत अधिक होता है।

प्रताड़ित करके निकलवाई जानकारी पर कार्रवाई हो-कनाडा

कनाडा, 8 फरवरी। कनाडा में ये बात सामने आई है कि सरकार ने खुफिया विभाग को आदेश दिया है कि अगर आम जनता की जान खतरे में है तो प्रताड़ित करके निकलवाई गई जानकारी पर भी आगे कार्रवाई की जाए।

यूपी चुनाव, पहले चरण में 38 % उम्मीदवार अपराधी

लखनऊ, 8 फरवरी (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए आगामी 8 फरवरी को हो रहे पहले चरण के चुनाव मैदान में आपराधिक छवि वाले 38 प्रतिशत उम्मीदवार तथा 51 फीसदी करोड़पति प्रत्याशी खम ठोंक रहे हैं।

चुनावों पर निगाह रखने वाली संस्था उत्तर प्रदेश इलेक्शन वाच द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक सूबे में होने वाले पहले चरण के चुनाव में कुल 867 प्रत्याशी मैदान में हैं जिनमें से 284 प्रमुख उम्मीदवारों द्वारा नामांकन के वक्त दाखिल हलफनामों के अध्ययन से पता लगता है कि उनमें से 38 प्रतिशत प्रत्याशी आपराधिक छवि के हैं। आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2007 में राज्य में हुए पिछले विधानसभा चुनाव के पहले चरण में 28 प्रतिशत उम्मीदवारों का आपराधिक इतिहास था मगर इस बार इसमें 10 फीसद का इजाफा हो गया है।

प्रमुख राजनीतिक दलों पर गौर करें तो इस चरण में उतारे गये 55 उम्मीदवारों में से सपा ने आपराधिक छवि के 28, बसपा तथा भाजपा ने 55 में से 24-24, कांग्रेस ने 54 में से 15, पीस पार्टी ने 42 में से 12, जनता दल यूनाइटेड ने 20 में से पांच तथा राष्ट्रीय लोकदल ने एक उम्मीदवार को मैदान में उतारा है। इन 109 उम्मीदवारों में से 46 पर हत्या, डकैती, अपहरण तथा रंगदारी वसूली जैसे संगीन अपराधों के मुकदमे दर्ज हैं।

पहले चरण के चुनाव में ताल ठोंक रही मुख्य सियासी पार्टियों में से बसपा के प्रत्याशियों की सम्पत्तियों का औसत सबसे ज्यादा है। उसके उम्मीदवारों की सम्पत्ति का औसत तीन करोड़ 83 लाख रुपए है। आंकड़ों के मुताबिक पहले चरण के चुनाव में ताल ठोंक रहे समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों की सम्पत्ति का औसत एक करोड़ 74 लाख रुपए, कांग्रेस उम्मीदवारों की सम्पत्ति का औसत एक करोड़ 34 लाख, पीस पार्टी उम्मीदवारों की सम्पत्ति का औसत एक करोड़ एक लाख तथा जनता दल यूनाइटेड के उम्मीदवारों की सम्पत्ति का औसत 32 लाख 9 हजार रुपए है। महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने के मामले में सभी प्रमुख दल फिसड्डी रहे हैं। पहले चरण के चुनाव में खड़े 867 प्रत्याशियों में से सिर्फ 65 यानी केवल सात प्रतिशत महिलाएं हैं। भाजपा ने छह, बसपा ने पांच तथा सपा और कांग्रेस ने चार-चार महिलाओं को टिकट दिया है। (बाकी पेज 10 पर)

देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर

पूजा शुक्ला

कुछ इसी प्रकार का मिजाज़ है उत्तर प्रदेश की कुछ छोटी मगर महत्वपूर्ण सियासी जमातों का, प्रदेश से चुनाव आयोग के पास दो शतक से भी ज्यादा पार्टिया पंजीकृत हैं। क्यों ना हो, आखिर लोकतंत्र की खूबसूरती भी यही है कि कमजोर से कमजोर संख्यावाले वर्ग भी बहुदलीय व्यवस्था से इसमें भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। इसी बहुदलीय व्यवस्था की ही वजह से कोई एक कौम-जाति-मज़हब, सियासत पर बपौती नहीं कर सकता, मसलन अगर 12 फीसदी चमार-जाटव बसपा में छाए हुए है तब ऐसे में खटिक व अन्य महादलित जातियों के नए वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में इंडियन जस्टिस पार्टी के उदित राज आगे आए हैं या अगर मुसलमानों के सबसे बड़े कामगार-पसमांदा अंसारी का कोई प्रभुत्वशाली मंत्री या राजनीतिक प्रतिनिधि सरकार में नहीं है तो पीस पार्टी बना डॉ अयूब पसमांदा की आवाज बनकर उभरे हैं।

पहले बड़े बड़े दलों में एक नेता होता था समाज के हर तबके के लोग उसके समर्थन में, अब प्रथा बदल रही है अब समाज के विभिन्न तबको का अपना दल है और वे अपने गठबंधनों से सामूहिक नेतृत्व उभरता है। अभी हाल ही में चुनावों से ऐन पहले दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में इत्तेहाद फ्रंट नामक एक नये राजनीतिक मोर्चे ने जन्म लिया जो इसी प्रकार के सामूहिक नेतृत्व की एक कोशिश है।

फ्रंट में छोटी मोटी कई सारी पार्टीयाँ मसलन अंसारी मुसलमानों की बहुलता वाली मोहम्मद अयूब की पीस पार्टी, पासी व खटीक बहुलता वाली उदितराज की इंडियन जस्टिस पार्टी, राजभर जाती के आदर्श सुहेलदेव के नाम पर बनी ओम प्रकाश राजभर की भारतीय समाज पार्टी, क्षेत्रीय आकांक्षाओं पर आधारित ललितपुर के पूर्व राजसी परिवार के राजा बुंदेला के नेतृत्व में बनी बुंदेलखंड कांग्रेस, कुर्मी बाहुल्य स्व. सोने लाल पटेल की पुत्री अनुराधा पटेल के नेतृत्व वाली अपना दल, पूर्वांचल के बाहुबली नेताओं से भरी पूर्व सांसद अफजाल अंसारी की कौमी एकता दल, इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल, भारतीय युवा कल्याण पार्टी, भारतीय जनसेवा पार्टी, नेशनल लोक तांत्रिक पार्टी, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी, इंडियन नेशनल लीग, और राष्ट्रीय परिवर्तन मोर्चा आदि दलों ने एक मंच पर आकर कांग्रेस-भाजपा-सपा-बसपा के चतुर्कोणीय मुकाबले को काफी हद तक प्रभावित करने की कोशिश की है।

इस तीसरे मोर्चे जिसका एक बड़ा हिस्सा ऐसे लोगों का है जो सामाजिक तौर पर पिछड़े हुए हैं, इनमें गरीब ब्राह्मण, पिछड़ी जातियां मसलन कुर्मी, भारतीय समाज वाले राजभर-केवट व अतिदलित और पसमांदा मुसलिम समाज के लोग शामिल हैं अपने लोगों को जोड़ सके तब समीकरण दिलचस्प हो जाएंगे।

दिसंबर में ही एक दूसरा गठबंधन भी कुछ इसी तरह के दलों का है जिसमें चतर सिंह कश्यप की वंचित जमात पार्टी, नत्थीराम सैनी की राष्ट्रीय महानदल, गोपाल कुशवाहा की राष्ट्रीय समानता दल, रणबीर पाल की राष्ट्रवादी लेबर पार्टी, अरशद पवार की नेलोपा, रामसमुझ की अवामी समता पार्टी, धर्मपाल चौहान की अति पिछड़ा महासंघ, हूबलाल कोरी की जनसेवक संघ और राष्ट्रवादी आर्थिक स्वतंत्रता दल जैसे दर्जन भर से अधिक छोटे दलों को एक मंच पर लाकर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के कुंवर हरिवंश सिंह ने राष्ट्रीय परिवर्तन मोर्चा नाम का विशुद्ध क्षत्रिय गठजोड़ के रूप में खड़ा हुआ।

क्षत्रिय हमेशा ही किंगमेकर रहे हैं अगर ये लोग सत्ता प्राप्त नहीं कर सकते तो भी सत्ता के अनुभव के चलते चुनाव बाद की सियासी साझेदारिया में मददगार हो सकते है। राहुल गांधी की तरह ही विश्वास से लबरेज परिवर्तन मोर्चा के प्रवक्ता कुंवर राघवेन्द्र सिंह राजू कहते हैं कि इस बार राष्ट्रीय परिवर्तन मोर्चा के बिना कोई सरकार नहीं बनेगी। हालांकि जनवरी आते आते उनके इस गठबंधन को अपने मुस्लिम चेहरे और केंद्रीय मंत्री पर्यटन राज्य मंत्री सुलतान अहमद की बदौलत तृणमूल कांग्रेस ने अपने साथ खड़ा कर लिया।

इन गठबंधनों के अलावा भी कई अन्य संगठन इन चुनावों में सक्रिय है जिनमें प्रमुख है शाक्य-कुशवाहा बहुलता वाली केशव देव शाक्य की महान पार्टी, पूर्वांचल की मांग को आगे बढाते हुए व् अमर जयप्रदा के जलवे बिखेरती राष्ट्रीय लोकमंच, बिंद- मल्लाह- केवट और निषाद बहुलता वाली प्रेमचन्द बिन्द की प्रगतिशील मानव समाज पार्टी भी है। बसपा सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री रहे हंडिया के निवर्तमान विधायक राकेश धर त्रिपाठी व

(बाकी पेज 10 पर)

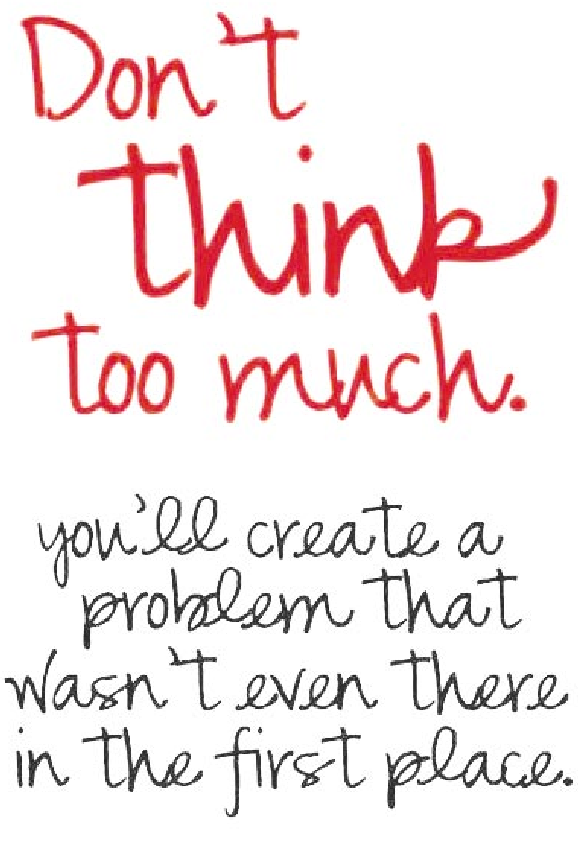

बहुत अधिक मत सोचें, वरना एक ऐसी दिक्कत पैदा कर लेंगे जो अब तक नहीं थी

सपा के साथ गठबंधन पर विचार कांग्रेस को नुकसान भी दे सकता है

नई दिल्ली, 8 फरवरी (टाईम्स ऑफ इंडिया)। कार्यकर्ताओं को सरकार में सपा के साथी के रूप में खुद को देखने की शह देना कांग्रेस के लिए घटते लाभ के नियम जैसा साबित हुआ है, जिससे पार्टी के भीतर इस बात को लेकर चिंता पैदा हो गई है कि मुलायम के मताधार में सेंध लगाने की उसकी कोशिशों को इससे नुकसान पहुंचेगा।

उत्तर प्रदेश में चुनाव के पहले चरण तक पहुंचने के बाद राहुल द्वारा चुनाव पश्चात के गठबंधन से इंकार करना, कांग्रेस को विकल्प समझ रहे गुटों को बीच में अटकने से रोकने के लिए अपनाई गई रणनीति का हिस्सा है। असल चिंता उन सामाजिक गुटों को लेकर है जिन्हें कांग्रेस सपा से छीनना चाहती है।

मुस्लिम दोनों पार्टियों के लिए मताधार हैं। मध्य व पश्चिम उत्तर प्रदेश में वह जिन पिछड़ी जातियों को लुभाने में जुटी है वह भी सपा का एक और मताधार है। मध्य उत्तर प्रदेश में, मुलायम के गढ़ में समाजवादी पार्टी से दामन झटक कर राहुल के फौजियों की तरह चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों को चुनाव के बाद गठबंधन का विचार निराशाजनक लगेगा।

कांग्रेस ने इन वर्गों को लुभाने मे कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है नौकरी में कोटा और कोटे में कोटा देने की घोषणा उसकी गम्भीरता दिखाती है, लेकिन इन वर्गों को अगर यह अहसास हुआ कि कांग्रेस की तरफ मुड़ने से भी उन्हें खास फायदा नहीं होगा, तो वह मतदान करने की बजाए अपने घरों में ही बने भी रह सकते हैं।

कांग्रेसी खेमे में चुनाव बाद के गठबंधन की बार-बार की घोषणाएं इसी बात के प्रति चिंता जाहिर करती हैं। दिसम्बर में राहुल गांधी का एआईसीसी की बैठक में जीत का दावा, दो दशकों से सत्ता से बाहर रह कर सुस्त बन बैठी अपनी पल्टन में चाभी भरने का एक तरीका था। वर्ना चुनावी जमीन पर कांग्रेस एक छोटी मोटी पार्टी के रूप में उभरने के डर से जूझ रही है।

लेकिन बार-बार उसका यह कहना सपा के साथ उसके गठबंधन की सम्भावनाएं मजबूत ही करता है, हलांकि इसके फायदे के साथ ही इसके अपने नुकसान भी है। मतदान के 24 घंटों पहले इस बात पर यकीन करने वाले लोग बहुत कम थे कि कांग्रेस और सपा में गठबंधन नहीं होगा। खासकर कर तब, जब बसपा के साथ गठबन्धन की सम्भावना नहीं हैं।

यह केवल उत्तर प्रदेश की ही बात है, ऐसा भी नहीं है। तृणमूल कांग्रेस के ताजा तेवरों के मद्देनजर मनमोहन और मुलायम की केंद्र में भागीदारी की सम्भावना बढ़ गई है और एआईसीसी सपा के साथ गठबन्धन पर विचार करने लगी है। केन्द्र में गठबंधन की सम्भावना ने राज्य में गठबंधन की अफवाहों का बाजार गर्म किया हुआ है।

मऊ में 7 फरवरी को चुनावी सभा के दौरान भाजपा की वरिष्ठ नेता उमा भारती के पैरों में दर्द के कारण उनको कुर्सी समेत मंच से उठाकर ले जाते सुरक्षाधिकारी व पार्टी कार्यकर्ता।